परियोजना संवाद पत्र

अंक : 11
मार्च 2024

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्तपोषित)

भीतर :

- मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से
- जापान–श्रीलंका में जाइका वानिकी परियोजना की चर्चा
- मुख्य परियोजना निदेशक ने लिया मंत्री धर्माणी के विजन को साकार बनाने का संकल्प
- घुमारवीं में खुलेगा बैंबू प्रोडक्ट सेंटर
- बांस उत्पादकों के लिए बनेगी सोसायटी, खुलेंगे स्वरोजगार के द्वार
- भार्क टैंक फेम योगेश शिंदे मार्केटिंग में करेंगे सहयोग
- चौपाल वन मंडल में बावड़ी निर्माण के कार्य
- नूरपुर वन मंडल के विकास कार्य
- ग्राम वन विकास समिति कामरिंग के विकास कार्य
- कड़ैल ग्राम वन विकास समिति के द्वारा सामुदायिक भवन का निर्माण
- मंडी वन मंडल के समूहों द्वारा केंचुआ खाद उत्पादन
- राधा ष्ण मंदिर स्वयं सहायता समूह द्वारा केंचुआ खाद उत्पादन
- संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना
- आजीविका घटक के तहत व्यावसायिक योजनाओं का निर्माण
- मीडिया में प्रोजेक्ट की गतिविधियाँ

परियोजना कार्यालय

टुटू शिमला-11, हिमाचल प्रदेश। दूरभाष: 0177-2838217,
ईमेल : cpdjica2018hpfd@gmail.com

मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से...

यूं ही चलता रहे

आजीविका सुधार का दौर, आएगी आर्थिकी में रफ्तार

जाइका वानिकी परियोजना का 11वां परियोजना संवाद पत्र आपको सौंपते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। यह परियोजना हिमाचल में वन तंत्र प्रबंधन, सामुदायिक विकास एवं आजीविका सुधार के लिए कार्य कर रही है। मेरा मानना है कि आने वाले समय में भी प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका सुधार का यह दौर यूं ही चलता रहे और उनकी आर्थिकी में भी लगातार वृद्धि होती रहे। इस परियोजना को शिखर पर पहुंचाने के लिए पूरी टीम ने ग्राउंड जीरो से काम किया, जिसकी पहचान आज विश्व के कई देशों में हो रही है। यहां यह बताना भी जरूरी है कि इस परियोजना की कुल लागत 800 करोड़ रुपये है और अवधि 10 वर्ष यानी 2018–19 से 2027–28 है। जाइका वानिकी परियोजना का मुख्य लक्ष्य हिमाचल प्रदेश में सतत् सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए वन क्षेत्रों द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं में सुधार किया जाना है। वर्ष 2022 में जिला कांगड़ा को भी इस परियोजना में शामिल किया गया। अब यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों किन्नौर, शिमला, बिलासपुर, मंडी, कुल्लू, लाहौल–स्पीति और कांगड़ा के 9 वन वृतों, 22 वन मंडलों, 72 वन परिक्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही है। हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना में 460 माइक्रोप्लान व 920 स्वयं सहायता समूहों की आजीविका बढ़ाने के लिए प्लान तैयार किए जा रहे हैं। वनों में हरित आवरण बढ़ाने के लिए परियोजना द्वारा पौधरोपण किया जा रहा है।

जाइका वित पोषित हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के तहत राज्य में लोगों के माध्यम से परियोजना का कार्यान्वयन हो रहा है। मशरूम की खेती, पत्तल का कारोबार, हथकरघा एवं बुनकर, सिलाई–कटाई और मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण, ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स को बढ़ावा देना, ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण करने सहित कई गतिविधियां चल रही हैं। इसके साथ–साथ जाइका वानिकी परियोजना द्वारा अपनी ही नर्सरी में तैयार हुए पौधों को सामुदायिक तौर पर पौधरोपण भी सर्वोच्च प्राथमिकता है। परियोजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आर्थिकी में निरंतर सुधार करने के प्रसास किए जा रहे हैं। आजीविका सुधार क्षेत्र में 24 मॉडल पर कार्य चल रहे हैं। इस क्षेत्र में आजीविका कमाने के लिए स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं। कैपिटल कॉस्ट के तौर पर 75 प्रतिशत का बजट जाइका की ओर से दिए जाते हैं, जबकि 25 प्रतिशत स्वयं सहायता समूहों को स्वयं व्यय करना पड़ता है। विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों को भी अच्छी कीमत मिल रही है। हिमाचल प्रदेश में वन विभाग और पीएफएम सहभागी वन प्रबंधन के अंतर्गत हर साल पौधरोपण किया जाता है। अब तक प्रदेश में लगभग 68 सौ हेक्टेयर वन भूमि पर पौधरोपण किया जा चुका है। वर्ष 2023 में 2000 हेक्टेयर भूमि पर पौधे रोपने का लक्ष्य रखा गया था जो रिकार्ड 2300 हेक्टेयर भूमि पर पौधे रोपे गए। हिमाचल में हरित आवरण को वर्ष 2030 तक 30 प्रतिशत बढ़ाने के लिए जाइका वानिकी परियोजना का अहम भूमिका निभा रही है। सहभागी वन प्रबंधन के तहत अब तक 3589 हेक्टेयर और विभागीय स्तर पर 3208 हेक्टेयर भूमि पर पौधरोपण किया जा चुका है। जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से हो रहे जनकल्याण कार्यों को इस त्रैमासिक पत्रिका लेखकों ने बखूबी उकेरा है। प्रदेश सरकार ने भी परियोजना के कार्यों की सराहना की है। हाल ही में 24 फरवरी 2024 को घुमारवीं में बांस उत्पादकों को प्रोत्साहित करने एवं उनकी आजीविका में सुधार के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें टीसीपी, हाउसिंग एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री राजेश धर्माणी ने शिरकत की थी। मंत्री महोदय का विजन था कि जिला बिलासपुर में बांस आधारित उत्पादों पर निर्भर लोगों को आर्थिकी कमाने का साधन मिल जाए। इसी संदर्भ में जाइका वानिकी परियोजना ने बांस उत्पादकों के लिए एक सासायटी बनाने का निर्णय लिया, जो आने वाले समय में मील का पत्थर साबित होगी। जिस तरह से मंत्री महोदय ने बांस उत्पादकों को नेशनल हाईवे के समीप उनके उत्पाद बेचने के लिए स्थान चिंहित करने की बात की है, इससे आने वाले समय में बांस उत्पादकों को आजीविका सुधार कर आर्थिकी कमाने का बेहत अवसर प्राप्त होंगे।

मैं पिछले चार वर्षों से अधिाक समय से प्रोजेक्ट में कार्यरत सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में भी इसी तरह परियोजना को सफल बनाने के लिए योगदान देते रहेंगे और ग्रामीण क्षेत्रें के लोगों की आजीविका में और सुधार के लिए बेहतरीन कार्य करते रहेंगे।

शुभकामनाएं व धन्यवाद।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा. व. से.
अतिक्ति प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका

यूं ही जापान-श्रीलंका में नहीं बजा

हिमाचल जाइका

वानिकी परियोजना का डंका

जाइका वानिकी परियोजना का डंका जापान और श्रीलंका में यूं ही नहीं बजा। इसके पीछे आईएफएस अधिकारी एवं परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया की अहम भूमिका रही। हालांकि हिमाचल प्रदेश में जाइका वानिकी परियोजना वर्ष 2018 से आई थी, लेकिन अगस्त 2019 से लेकर मार्च 2024 के अंतराल में इस प्रोजेक्ट को शिखर पर पहुंचाने के लिए नागेश कुमार गुलेरिया ने कोई कमी नहीं छोड़ी। आज हिमाचल जाइका वानिकी परियोजना की पहचान जापान, श्रीलंका समेत विश्व के कई देशों में हो चुकी है। जिला मंडी के गाहर गांव में 16 मार्च 1964 में जन्में नागेश कुमार गुलेरिया नवंबर 1985 में बतौर हिमाचल प्रदेश वन सेवा यानी एचपीएफएस के पद पर सेवाएं भाुरू की थी। वर्ष 1994 में वे भारतीय वन सेवा में आए। नागेश कुमार गुलेरिया ने 40 वर्शों तक वन विभाग में सेवाएं दी। प्रदेश के विभिन्न वन मंडलों में बतौर डीएफओ उसके बाद विभाग में सीसीएफ और एपीसीसीएफ के पद पर सेवाएं देते वक्त उन्होंने प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों की जनता के लिए आजीविका कमाने का रास्ता तलाश कर उनके लिए सेतु का काम किया। जो आज जाइका वानिकी परियोजना में देखने को मिल रहा है। गौरतलब है कि हिमाचल प्रदेश में जाइका वानिकी परियोजना वर्ष 2018 में आई थी। अगस्त 2019 में नागेश कुमार गुलेरिया को इस परियोजना का दायित्व सौंपा गया और मुख्य परियोजना निदेशक की कमान सौंप दी। तब से लेकर अब तक नागेश कुमार गुलेरिया ने इस परियोजना में प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को आजीविका कमाने और उनकी आर्थिकी में बेहतरीन सुधार करने के लिए प्रोत्साहित किया। यही वजह है कि आज जाइका वानिकी परियोजना के तहत प्रदेश में 460 ग्राम वन विकास समितियां बनी और 894 स्वयं सहायता समूह बन चुके हैं। उन्होंने 920 स्वयं सहायता समूह बनाने का लक्ष्य रखा था। मुख्य परियोजना निदेशक का एक ही लक्ष्य था कि जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े स्वयं सहायता समूह आत्म निर्भर बनकर अपनी आर्थिकी में सुधार कर रहे। जिसका परिणाम सामने आ चुके हैं। यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों किन्नौर, शिमला, बिलासपुर, मंडी, कुल्लू, लाहौल–स्पीति और कांगड़ा के 9 वन वृतों, 22 वन मंडलों, 72 वन परिक्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही है। हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना में 460 माइक्रोप्लान व 920 स्वयं सहायता समूहों की आजीविका बढ़ाने के लिए प्लान तैयार किए जा रहे हैं। वनों में हरित आवरण बढ़ाने के लिए परियोजना द्वारा पौधरोपण किया जा रहा है।

गुलेरिया के प्रयासों से होने लगा आजीविका में सुधार

परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया के अथक प्रयासों से ही आज ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की आजीविका में सुधार हो रहा है। जाइका वित्त पोषित हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के तहत राज्य में लोगों के माध्यम से परियोजना का कार्यान्वयन हो रहा है। मशरूम की खेती, पत्तल का कारोबार, हथकरघा एवं बुनकर, सिलाई–कटाई और मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण, ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स को बढ़ावा देना, ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण करने सहित कई गतिविधियां चल रही हैं। इसके साथ–साथ जाइका वानिकी परियोजना द्वारा अपनी ही नर्सरी में तैयार हुए पौधों को सामुदायिक तौर पर पौधरोपण भी सर्वोच्च प्राथमिकता है। परियोजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आर्थिकी में निरंतर सुधार करने के प्रसास किए जा रहे हैं। आजीविका सुधार क्षेत्र में 24 मॉडल पर कार्य चल रहे हैं। इस क्षेत्र में आजीविका कमाने के लिए स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं। कैपिटल कॉस्ट के तौर पर 75 प्रतिशत का बजट जाइका की ओर से दिए जाते हैं, जबकि 25 प्रतिशत स्वयं सहायता समूहों को स्वयं व्यय करना पड़ता है। विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों को भी अच्छी कीमत मिल रही है। अब तक 1 करोड़ 25 लाख की बिक्री हो चुकी है, जो बहुत बड़ी उपलब्धि है। आने वाले समय में इसे विनियमित किए जाएंगे।

प्रदेश में अवैध खैर कटान पर नकेल

प्रदेश में खैर के अवैध कटान पर नकेल कसने में नागेश कुमार गुलेरिया ने कोई कसर नहीं छोड़ी वर्ष 1998 से 2002 तक जब वे डीएफओ बिलासपुर के पर पर सेवाएं दे रहे थे तो उन्होंने खैर के अवैध कटाने करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की।

आईएफएस नागेश गुलेरिया ने कब-कहां दी सेवाएं

- वर्ष 1985 में बतौर हिमाचल वन सेवा अधिकारी सेवाएं भाुरू की।
- वर्ष 1987 में डीएफओ चौपाल के पद से रहे।
- 1995 से 1998 तक ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क के

निदेशक रहे।

- 1998 से 2002 तक डीएफओ बिलासपुर के पद पर रहे। इस दौरान उन्होंने खैर के अवैध कटान पर पूरी तरह से नकेल कसी।
- 2002 से 2007 तक डीएफओ शिमला रहते हिमाचल प्रदेश ईको टूरिज्म की नीति तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- 2007 से 2010 तक डीएफओ वाइल्ड लाइफ शिमला के पद पर सेवाएं दी।
- वे हिमाचल प्रदेश वन विकास निगम में निदेशक के पद पर रहे।
- वे अगस्त 2019 से 31 मार्च 2024 तक जाइका वानिकी परियोजना में मुख्य परियोजना निदेशक पद पर रहे।

खेल गतिविधियों में भी विभाग को चमकाया

- आईएफएस अधिकारी एवं जाइका वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने खेल गतिविधियों में भी विभाग को चमकाने में कोई कमी नहीं छोड़ी। वर्ष 2009 में उन्होंने हिमाचल प्रदेश फोरेस्ट स्पोर्ट्स वेल्फेयर सोसायटी का पंजीकरण करवाया और वे सोसायटी के फाउंडर मेंबर एवं सीईओ रहे।
- वन विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए हर वर्ष स्पोर्ट्स मीट का आयोजन करवाते रहे।
- बतौर नोडल अफसर उनके नेतृत्व में 19वां ऑल इंडिया फोरेस्ट स्पोर्ट्स एंड डयूटी मीट के दौरान पूरे देश में हिमाचल ने 7 गोल्ड, 5 सिल्वर और 8 ब्रांज मैडल जीते।
- वर्ष 2011 में ऑल इंडिया फोरेस्ट क्वीज में गोल्ड, 2010 और 2015 में ब्रांज मैडल जीते।

मुख्य परियोजना निदेशक ने लिया मंत्री धर्माणी के विजन को साकार बनाने का संकल्प

जाइका वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने टीसीपी, हाउसिंग एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री के विजन को साकार बनाने का संकल्प लिया। गत 24 फरवरी 2024 को घुमारवीं में बांस उत्पादकों के लिए आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मंत्री राजेश धर्माणी का विजन था कि बांस का कारोबार करने वाले समुदायों की आर्थिकी में सुधार कर सकेत हैं। इसी दिशा में जाइका वानिकी परियोजना इन समुदायों के साथ खड़ी है। नागेश कुमार गुलेरिया ने कहा कि बांस पर निर्भर उत्पादकों के लिए यह परियोजना हर संभव प्रयास करेगी। उन्होंने कि परियोजना ने पहले चरण में एक करोड़ का बजट रखा है, जिसे और बढ़ाया जाएगा। बांस के कार्यों में सुधार के लिए मशीनें भी दी जाएगी। ताकि उनका उत्पाद हिमाचल में ही नहीं, बल्कि देश के कोने–काने में बिक सके। इस अवसर पर उन्होंने यहां मौजूद समुदायों के लोगों के साथ सीधा संवाद भी किया

और उनमें जोश भरने में कोई कमी नहीं छोड़ी। मुख्य परियोजना निदेशक ने कहा कि बांस पर आधारित समुदायों को आजीविका कमाने का अवसर आज से ही भुारू हो गया है। नागेश गुलेरिया ने कहा कि 31 मार्च से पहले बांस उत्पादकों की एक सोसायटी बनेगी। इसके लिए मात्र 100 रुपये की मेंबरशिप होगी। सोसायटी के बाद डीएफओ बिलासपुर की अध्यक्षता में ईसी यानी कार्यकारी समिति बनेगी, जो सोसायटी के नियम तय करेगी। उन्होंने कहा कि ईसी के बाद सीसीएफ बिलासपुर की अध्यक्षता में गवर्निंग बॉडी बनेगी, जो संसाधन जुटाने के तरीके तलाशेगी। गवर्निंग बॉडी के सदस्य सचिव डीएफओ बिलासपुर होंगे। मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने कहा कि बांस उत्पादकों को बांस के पौधे रोपने के लिए सरकारी जमीन उपलब्ध किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इस महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट से आजीविका सुधार के क्षेत्र में नया दौर भुारू होगा। नागेश कुमार गुलेरिया ने कहा कि जिला बिलासपुर में बांस के उत्पाद तैयार कर उसे प्रदेश से बाहर भी बिक्री के लिए जे जा सकेंगे। जिससे उत्पादकों की आर्थिकी में चार चांद लग जाएगा।

–आरपी नेगी, मीडिया स्पेशलिस्ट
जाइका वानिकी परियोजना

घुमारवीं में खुलेगा बैंबू प्रोडक्ट सेंटर

जाइका वानिकी परियोजना के जैव विविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा ने कहा कि जिला बिलासपुर के घुमारवीं में बैंबू सेंटर खुलेगा। उन्होंने बीते 24 फरवरी 2024 को घुमारवीं में एक दिवसीय कार्यशाला के दौरान बांस उत्पादकों के समक्ष बेहतरीन प्रजेंटेशन दी। इस अवसर पर डा. काप्टा ने यहां विराजमान बांस उत्पादकों से आहवान किया कि जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से घुमारवीं में कौशल आजीविका सेंटर खोला जाएगा। जिसमें विभिन्न चरणों में मशीनें भी रखी जाएगी ताकि बांस के उत्पाद तैयार हो सके। उन्होंने कहा कि बैंबू प्रोजेक्ट केवल घुमारवीं तक ही सीमित न रह जाए, इसके लिए जाइका वानिकी परियोजना से मिलने वाले सहयोग का पूर्ण लाभ उठाएं। बांस उत्पादकों को प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। डा. एसके काप्टा ने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना में बांस उत्पादकों के लिए बांस के विभिन्न पौधे उपलब्ध करवाले से लेकर मार्केटिंग का भी पूरा प्रावधान है। प्रदेश सरकार भी यही चाहती है कि बांस उत्पादकों की आर्थिकी में बेहतर सुधार हो, इस दिशा में जाइका वानिकी परियोजना हर संभव सहयोग करेगी। बांस उत्पादकों को एक्सपोजर विजिट पर त्रिपुरा राज्य में भी ले जा सकते हैं। ताकि यहां पर तैयार हो रहे बांस के उम्पादों की जानकारी हासिल कर सके। डा. एसके काप्टा कहते हैं कि घुमारवीं में जाइका वानिकी परियोजना का एक विक्रय केंद्र भी खुलने जा रहा है, जहां पर बांस से निर्मित उत्पादों की भी बिक्री होगी। गौरतलब है कि आज बांस के फर्नीचर, टोकरी, किल्टे समेत कई उत्पाद तैयार किए जाते हैं, जिसे मार्केट में बेच कर बांस उत्पादक अपनी अच्छी कमाई कर सकते हैं। डा. एसके काप्टा ने कैबिनेट मंत्री राजेश धर्माणी द्वारा सोसायटी बनाने की की गई घोशणा का धन्यवाद किया। कार्यशाला के दौरान प्रोग्राम मैनेजर जैव विविधता डा. कौशल्या ने बांस उत्पादकों को बैंबू प्रोजेक्ट के बारे विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने सोसायटी बनने से लेकर ईसी, गर्निंग बॉडी और उत्पादों को जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से किस तरह मार्केट मिल सकती है, इस बारे प्रेजेंटेशन दी।

-आरपी नेगी, मीडिया स्पेशलिस्ट
जाइका वानिकी परियोजना

बांस उत्पादकों के लिए बनेगी सोसायटी खुलेंगे स्वरोजगार के द्वार

प्रदेश में बांस उत्पादकों के लिए प्रदेश सरकार एक सहकारी सभा बनाएगी। ताकि उनके द्वारा निर्मित प्रोडक्ट्स को मार्केट में पहचान मिल सके और उनकी आर्थिकी में भी बेहतर सुधार हो सके। यह बात 24 फरवरी 2024 को घुमारवीं में जाइका वानिकी परियोजना द्वारा आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला को संबोधित करते हुए टीसीपी, हाउसिंग एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी ने कही। उन्होंने कहा कि मन में कई वर्शों से विचार आ रहा था कि बांस उत्पादों की महनत को देखते हुए प्रदेश में उनके लिए कुछ नया करने की आवश्यकता है। बांस उत्पादकों की आर्थिकी में सुधार हो, इसके लिए प्रदेश सरकार हर संभव सहयोग करेगी। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया के साथ एक साल से चर्चा कर रहा

था कि ऐसे समुदायों को आजीविका कमाने के बेहतर अवसर प्राप्त हो इसके लिए उन्हें नई योजना बनाने के जरूरत है। राजेश धर्माणी ने कहा कि बांस उत्पादकों के लिए जो सहकारी सभा बनेगी उसके मालिक आप ही होंगे। उनके उत्पादों को बेचने के लिए प्रदेश के नेशनल हाइवे के समीप स्वयं सहायता समूहों के लिए स्थान चिंहित कर देंगे। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि बांस उत्पादकों से रोजगार के द्वार भी खुलेंगे। उन्होंने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना की ओर से इस प्रोजेक्ट के लिए अभी एक करोड़ का बजट प्रस्तावित है जिसे और बढ़ाया जाएगा। राजेश धर्माणी ने कहा कि मैंने बांस उत्पादकों को मेहनत करते हुए देखा है। मंत्री ने कहा कि बांस उत्पादकों को आईएचबीटी पालमपुर में एक्सपोजर विजिट पर ले जा सकते हैं। उन्होंने यहां मौजूद लोगों से आहवाहन किया कि अगले दो साल में अंदर आपकी कमाई सामने दिखेगी। कार्यशाला को संबोधित करने से पहले मंत्री राजेश धर्माणी ने जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों के स्टॉल का अवलोकन किया। बैंबू इंडिया

के फाउंडर एंड सीईओ योगेश शिंदे ने बांस निर्मित उत्पादों से लोगों को आजीविका कमाने और उनकी आर्थिकी सुदृढ़ करने बारे विस्तृत जानकारी दी। जाइका वानिकी परियोजना के जैव विविधता विशेशज्ञ डा. एसके काप्टा, सीसीएफ बिलासपुर अनिल भार्मा, डीएफओ बिलासपुर, प्रोग्राम मैनेजर डा. कौशल्या कपूर, विशय वस्तु विशेशज्ञ डा. उल्शिदा, एफटीयू को–ऑर्डिनेटर, विभिन्न स्वयं सहायता समूहों के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

शार्क टैंक फेम योगेश शिंदे
मार्केटिंग में करेंगे सहयोग

शार्क टैंक फेम एवं बैंबू इंडिया के फाउंडर सीईओ योगेश शिंदे ने जिला बिलासपुर के बांस उत्पादों में जोश भरने में कोई कमी नहीं छोड़ी। गत 24 फरवरी 2024 को घुमारवीं में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला के दौरान यहां उपस्थित सैंकड़ों लोगों को बांस से आजीविका कमाने के गुर भी सिखाए। योगश शिंदे ने बांस उत्पादकों को अवगत करवाया कि बांस से निर्मित उत्पादों को देश और विदेशों में अच्छी कीमत मिल रही है। वे यहां अपने साथ बांस से निर्मित टुथ ब्रश, चश्मा, डायरी, पैन समेत कई अन्य उत्पाद लेकर आए थे। उन्होंने मंच से इन उत्पादों को प्रेजेंटेशन के माध्यम से लोगों को दिखाया। योगेश शिंदे ने कहा कि हिमाचल में बांस उत्पादों की मार्केटिंग के लिए वे हरसंभव सहयोग करेंगे। शिंदे ने कहा कि हिमाचल के उना में भी बैंबू इंडिया का प्रोजेक्ट भारू हो रहा है जो जल्द ही क्रियाशील हो जाएगा। गौरतलब है कि योगेश शिंदे पुणे से संबंध रखते हैं और पूर्व में वे मशहूर टीवी भाो भार्क टैंक में प्रस्तुति भी दे चुके हैं। घुमारवीं में आयोजित कार्यशाला में उपस्थित लोगों ने योगेश शिंदे की बातों को फॉलो करने का संकल्प लिया।

–आरपी नेगी, मीडिया स्पेशलिस्ट
जाइका वानिकी परियोजना

चौपाल वन मंडल में प्राकृतिक जल स्रोत का संरक्षण

जेआईसीए के समर्थन से एचपी वानिकी परियोजना के तहत, धार–चुरियां वार्ड समुदाय ने वीएफडीएस धार–चुरियां (ग्राम वन विकास सोसायटी) के सहयोग से एक जल संरचना, बावड़ी का निर्माण सफलतापूर्वक पूरा किया। इस परियोजना का उद्देश्य पानी की कमी को दूर करना और स्थानीय समुदाय के लिए एक स्थायी जल स्रोत प्रदान करना है। 100,000/– रूपए की लागत से यह परियोजना वर्ष 2023 में पूरी हुई।

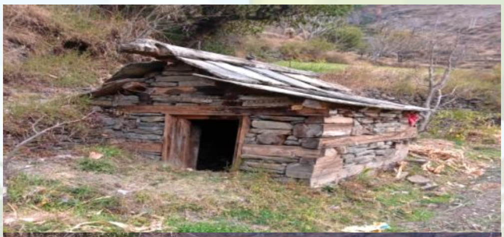

धार–चुरियाँ वार्ड पानी की कमी की समस्या का सामना कर रहा था, जिससे इसके निवासियों का दैनिक जीवन और गतिविधियाँ प्रभावित हो रही थीं। पानी की उपलब्धता के महत्व को पहचानते हुए, एचपी वानिकी परियोजना ने जेआईसीए के साथ साझेदारी में बावड़ी के निर्माण में समुदाय का समर्थन किया। बावड़ी को प्रातिक झरने को पकड़ने और संग्रहीत करने के लिए डिजाइन किया गया था, जो विभिन्न उद्देश्यों के लिए एक विश्वसनीय जल स्रोत प्रदान करता था। धार–चुरियां वार्ड समुदाय के सहयोगात्मक प्रयासों और एचपी वानिकी परियोजना (पीएफआईएचपीएफईएम एंड एल) और जेआईसीए के समर्थन से, बावड़ी का निर्माण सफलतापूर्वक पूरा हो गया।

जल संरक्षणः बावड़ी ने जल संसाधनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने वर्षा जल को प्रभावी ढंग से एकत्र किया और संग्रहीत किया, जिससे शुष्क मौसम के दौरान एक स्थायी जल स्रोत सुनिश्चित हुआ। इस संरक्षण उपाय ने बाहरी जल स्रोतों पर समुदाय की निर्भरता को कम किया और कुशल जल प्रबंधन को बढ़ावा दिया।

बावड़ी निर्माण परियोजना के पूरा होने से धार–चूरियां वार्ड के निवासियों के लिए जल पहुंच में उल्लेखनीय सुधार हुआ। संग्रहीत जल पीने और पशुधन पालन सहित विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करता है। आसानी से उपलब्ध पानी ने समुदाय की दैनिक गतिविधियों और समग्र कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव डाला।

सामुदायिक भागीदारीः परियोजना की सफलता सक्रिय सामुदायिक भागीदारी से हुई। धार–चुरियां वार्ड समुदाय, वीएफडीएस धार–चुरियां के साथ, बावड़ी की योजना, कार्यान्वयन और रखरखाव में सक्रिय रूप से लगे हुए हैं। इस सहभागी ष्टिकोण ने लाभार्थियों के बीच स्वामित्व और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दिया।

बावड़ी के निर्माण ने धार–चूरियां वार्ड को दीर्घकालिक जल सुरक्षा प्रदान की। विश्वसनीय जल स्रोत ने समुदाय की दैनिक जरूरतों के लिए पानी तक निर्बाध पहुंच सुनिश्चित की, जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हुई। बेहतर पानी की उपलब्धता ने धार–चूरियां वार्ड में षि गतिविधियों पर सकारात्मक प्रभाव डाला। किसान कुशल सिंचाई का अभ्यास कर सकते हैं, जिससे फसल की पैदावार में वृद्धि होगी और षि उत्पादकता में सुधार होगा। इससे खाद्य सुरक्षा और आर्थिक कल्याण में योगदान मिला। बावड़ी से विश्वसनीय जल आपूर्ति से धार–चूरियां वार्ड के पशुपालकों को लाभ हुआ। उनके पशुओं के लिए पानी तक पहुंच ने उनकी भलाई सुनिश्चित की और उत्पादकता में वृद्धि की, जिससे पशुधन पर निर्भर परिवारों की आजीविका में सुधार हुआ। जल संरक्षण और टिकाऊ संसाधन प्रबंधन पर परियोजना के फोकस ने पर्यावरण संरक्षण में योगदान दिया। बाहरी जल स्रोतों पर निर्भरता कम करके, परियोजना ने प्रातिक संसाधनों को संरक्षित करने और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद की। जेआईसीए के समर्थन से एचपी वानिकी परियोजना के तहत बावड़ी निर्माण परियोजना के सफल समापन से धार–चुरियां वार्ड में पानी की उपलब्धता और स्थिरता में काफी सुधार हुआ है। समुदाय, वीएफडीएस धार–चूरियां और परियोजना हितधारकों के सहयोगात्मक प्रयासों ने निवासियों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। परियोजना की सफलता सामुदायिक भागीदारी और सतत विकास प्रथाओं की प्रभावशीलता को दर्शाती है।

नरेंद्र कुमार

क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक

वन परिक्षेत्र कांडा वन मण्डल चौपाल

जाइका

के सहयोग से स्वच्छ पेयजल

जाइका के सहयोग से चल रही हिमचाल प्रदेश वानिकी परियोजना (पीएफआईएचपीएफईएम एंड एल) के तहत, ग्राम वन विकास समिति घिचना के लोगों ने परियोजना के सहयोग से एक बावड़ी (जल संरचना) की मरम्मत सफलतापूर्वक पूरी की। इस का उद्देश्य यह है कि स्वच्छ पानी गांव वासियों पूरे वर्ष उपलब्ध रहे जिसका उपयोग ग्रामीण और नजदीकी होटल व्यवसायी कर सकते हैं।

घिचना वार्ड पानी की कमी की समस्या का सामना कर रहा था, पानी की कमी से घिचना निवासियों का दैनिक जीवन और षि गतिविधियाँ प्रभावित हो रही थीं। पूरे वर्ष पानी की उपलब्धता के महत्व को पहचानते हुए, गांव निवासियों ने वानिकी परियोजना के सहयोग से पुरानी बावड़ी की मरम्मत करने का निर्णय लिया। बावड़ी को प्रातिक झरने के जल को संग्रहीत करने के लिए डिजाइन किया गया, जो विभिन्न उद्देश्यों के लिए जल विश्वसनीय स्रोत प्रदान करता है।

घिचना वार्ड समुदाय के सहयोगात्मक प्रयासों और एचपी वानिकी परियोजना (पी एफ आई एच पी एफ ई एम एंड एल) और जेआईसीए के समर्थन से, बावड़ी मरम्मत वर्ष 2022–23 के लिए सफलतापूर्वक पूरी की गई।

बावड़ी ने जल संसाधनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने वर्षा जल को प्रभावी ढंग से संग्रहित और संग्रहित किया, जिससे शुष्क मौसम के दौरान एक स्थायी जल स्रोत के साथ–साथ आस–पास के जल स्रोत का पुनर्भरण भी सुनिश्चित हुआ। इस संरक्षण उपाय ने बाहरी जल स्रोतों पर समुदाय की निर्भरता को कम किया और कुशल जल प्रबंधन को बढ़ावा दिया।

बढ़ी हुई जल पहुंचः बावड़ी मरम्मत परियोजना के पूरा होने से घिचनावार्ड के निवासियों के लिए पानी की पहुंच में काफी सुधार हुआ। संग्रहीत जल पीने और पशुधन पालन सहित विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करता है। आसानी से उपलब्ध पानी ने समुदाय की दैनिक गतिविधियों और समग्र कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव डाला।

सामुदायिक भागीदारीः परियोजना की सफलता सक्रिय सामुदायिक भागीदारी से हुई। घिचनावार्ड समुदाय, वीएफडीएस घिचनावार्ड के साथ, बावड़ी की योजना, कार्यान्वयन और रखरखाव में सक्रिय रूप से लगा हुआ है। इस सहभागी ष्टिकोण ने लाभार्थियों के बीच स्वामित्व और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दिया।

जल सुरक्षाः बावड़ी की मरम्मत ने घिचना वार्ड को दीर्घकालिक जल सुरक्षा प्रदान की। विश्वसनीय जल स्रोत ने समुदाय की दैनिक जरूरतों के लिए पानी तक निर्बाध पहुंच सुनिश्चित की, जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हुई।

बेहतर जल उपलब्धता ने घिचना वार्ड में षि गतिविधियों पर सकारात्मक प्रभाव डाला। किसान कुशल सिंचाई का अभ्यास कर सकते हैं, जिससे फसल की पैदावार में वृद्धि होगी और षि उत्पादकता में सुधार होगा। इससे खाद्य सुरक्षा और आर्थिक कल्याण में योगदान मिला। बावड़ी से विश्वसनीय जल आपूर्ति से घिचना वार्ड में पशुपालकों को लाभ हुआ। उनके पशुओं के लिए पानी तक पहुंच ने उनकी भलाई सुनिश्चित की और उत्पादकता में वृद्धि की, पशुधन पर निर्भर परिवारों के साथ–साथ जंगली जानवरों आदि की आजीविका में सुधार हुआ।

जल संरक्षण और टिकाऊ संसाधन प्रबंधन पर परियोजना के फोकस ने पर्यावरण संरक्षण में योगदान दिया। बाहरी जल स्रोतों पर निर्भरता को कम करके, परियोजना ने प्रातिक संसाधनों को संरक्षित करने और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के साथ–साथ भूजल स्तर को भी बढ़ाया जा सकता है।

जेआईसीए के समर्थन से एचपी वानिकी परियोजना (पीएफआईएचपीएफईएम एंड एल) के तहत बावड़ी मरम्मत परियोजना के सफल समापन से घिचना वार्ड में पानी की उपलब्धता और स्थिरता में काफी सुधार हुआ है। समुदाय, वीएफडीएस घिचना और परियोजना हितधारकों के सहयोगात्मक प्रयासों ने निवासियों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। परियोजना की सफलता सामुदायिक भागीदारी और सतत विकास प्रथाओं की प्रभावशीलता को दर्शाती है।

रेखा,

क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक

वन परिक्षेत्र चौपाल वन मण्डल चौपाल

नूरपुर वन मंडल के विकास कार्य

हिमाचल प्रदेश पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंन्धन एवं आजिविका सुधार परियोजना (PIHPFEM&L) का मुख्य उदेश्य स्थायी वन परिस्थतिकी तंत्र प्रबंन्धन, जैव विविधता संरक्षण लोगों की सतत आजीविका सुधार और संस्थानागत क्षमता को मजबूत करके परियोजना के क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण और टिकाउ सामाजिक आर्थिक विकास के लिए योगदान देना है। नूरपुर वन मण्डल में परियोजना वर्श 2022 में भुारू की गई है । इस परियोजना के अर्न्तगत चार वन परिक्षेत्र –नूरपुर, ज्वाली, रे और इन्दौरा में 30 ग्रामीण वन विकास समीतियों का गठन किया गया है। प्रत्येक वन विकास समीति में दो वार्डों का चयन किया गया है।

पहचाने गए क्षेत्रों की सहभागीता वन प्रबंन्धन वन सहभागिता प्रबन्धंन (PFM) और विभागीय मोड़ में किया गया है। जिससे वनों में वहुउदेश्य वृक्षारोपण द्वारा कम एवं मध्यम घने जंगलों का संघनीकरण करके घने जंगलो में परिवर्तित किया जाएगा। चारागाह एंव घास के क्षेत्रों में सुधार करके लोगों को घास पत्ती उपलब्ध हो और पशुओं को खूंटे में बांधने की आदत बने जिससे जंगलो में नुकसान न हो।

ग्रामीण वन विकास समीति स्तर पर परियोजना की गतिविधियों की पांच वर्श की सुक्ष्म योजना तैयार की गई है। वन और आजिविका विकास के लिए विशेश ध्यान रखते हुए 600 है0 (प्रति समीति 20 है0 के हिसाब से कुल 600 है0) वन और गैर वन क्षेत्रों को भाामिल किया गया है।

परियोजना के कार्यावयन प्रकिया में कुशल और प्रभावी सामुदायिक भागिदारी के लिए प्रत्येक ग्राम वन विकास समीति में एक पुरूश या महिला वार्ड सुविधाकर्ता तैनात किए गए हैं।

क्षेत्र की ग्रामीण महिलाओं की आजिविका सुधार एवं सशक्तिकरण के लिए विभिन्न आजिविका कार्यविधियां तैयार की गई हैं।

58 स्वयं सहायता समूह तैयार हो चुके हैं तथा 2–स्वयं सहायता समूह में कार्य प्रगति में है। कपड़ा सिलाई–कटाई, बैग बनाना, आचार–चटनी,पापड़ तैयार करना, खुम्ब उत्पादन, हल्दी उगाना, पत्तल बनाना (टौर के पत्तों की), केंचुआ खाद तैयार करना मुख्य गतिविधियां आजिविका स्त्रोत हैं। कुछ महिला स्वयं सहायता समुह ने परियोजना के स्त्रोत माध्यम से प्रशिक्षण लेकर समूह में कार्य करना भुारू कर दिया है। जिससे उनकी आय में वृद्वि हो रही है।

वितिय वर्ष 2023–24 में विभिन्न 14 स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को परियोजना द्वारा भिन्न–2 आय सृजन गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण के बाद स्वयं सहायता समूहों ने अपने स्तर पर कार्य करना भुारू कर दिया है। जिससे उनकी आमदनी में बढोतरी हो रही है।

स्वयं सहायता समूह जौन्टा

इस समूह में 10 महिलाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त कर के सिलाई का कार्य भुारू कर दिया है। इन महिलाओं ने अपने स्थानिय स्थान (जौन्टा) में सिलाई करने के लिए दुकान खोली तथा अक्तूबर 2023 से नम्बवर 2023 तक कुल 9000/– रूपये का मुनाफा कमाया। भुरूआत में इन्होने सिलाई के कम

दाम रखे। भविष्य में इस स्वयं सहायता समूह की महिलाएं वुटीक खोलकर बड़े स्तर पर कार्य करने की आशा रखती हैं।

स्वयं सहायता समूह नागनी (भारती एस.एच.जी.)

इस स्वयं सहायता समूह में 14 महिलाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने कार्य की भुारूआत कर दी है तथा अक्तूवर माह तक इस स्वयं सहायता समूह ने 11700/– रूपये की राशि अर्जित की है।

स्वयं सहायता समूह लदौडी श्री गणेश

श्री गणेश स्वयं सहायता समूह में 12 महिलाओं ने पापड़, सीरा, बड़ियों का प्रशिक्षण प्राप्त किया इस स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने अपनी गतिविधियों के इलावा चील के पततियों से विभिन्न प्रकार की टोकरियां व सजावटी सामान बनाया।

वन मण्डल अधिकारी नूरपुर ने स्वयं सहायता समूह (SHG) के द्वारा बनाई गई टोकरियां एवं सजावटी सामान खरीदा व KFW परियोजना की जर्मनी से आई निरिक्षण दल को यादगार के रूप में सहप्रेम भेंट की।

स्वयं सहायता समूह कोपड़ा

प्रशिक्षण के बाद स्वयं सहायता समूह कोपड़ा एवं खन्नी की महिलाएं अजिविका के उत्पादन स्तर पर आ गई हैं। इन समूहों की महिलाओं ने अपने उत्पादन को प्रारंभिक स्तर पर भुारू कर दिया है।

वन मण्डल अधिकारी नूरपुर ने उनके द्वारा बनाए गए उत्पादन पदार्थों, अचार, चटनी को खरीदा व **KFW** की जर्मनी से आई निरिक्षण दल को यादगार के रूप में स्प्रेम भेंट किया।

स्वयं सहायता समूह कोपड़ा प्रशिक्षण के बाद स्वयं सहायता समूह वदूही में हरे कृश्णा स्वयं सहायता समूह की 10 महिलाओं ने कार्य **(Cutting & tailoring)** प्रारंभिक स्तर पर भुारू कर दिया है।

इस कार्य के इलावा भी समूह की महिलाओं ने अपने स्तर पर लडडू गोपाल की पोशाक (जन्माश्टमी) के अवसर पर बेची इस माध्यम से भी उन्होंने अपनी आजीविका में काफी सुधार लाया। इसके इलावा इसी समूह की महिलाओं ने रक्षाबन्धन के अवसर पर राखियां व पूजा थालियां बनाकर बेची व काफी मुनाफा कमाया तथा वन मण्डल अधिकारी नूरपुर ने उनके उत्पादन में बिक्री करने में काफी मदद की।

इसी स्वयं सहायता समूह ने दीवाली के अवसर पर पपीते की बर्फी, लौकी की बर्फी बनाकर भी काफी कमाई की।

सुती शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (वानिकी और जैवविविधता)

ग्राम वन विकास समिति कामरिंग के विकास कार्य

हिमाचल प्रदेश के जिला लाहौल स्पिति के वन मंडल केलोंग में सोसाइटी आधिनियम के तहत 14 ग्राम वन विकास समितियां (**VFDS**) गठित की गयी हैं। लाहौल स्पिति हिमाचल प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है। जो की 911195 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला हुई है। सर्दियों के मौसम में यहाँ भरी वर्फबारी होती है और तापमान 25 डिग्री तक गिर जाता है। कठिन परिस्थितियों के कारण स्थानिय लोगों के पास काम का लिए सिमित समय ही होता है।

वन परिक्षेत्र पट्टन के अन्तर्गत 7 वी.एफ.डी.एस. शामिल की गयी है। जिसमें से एक वी.एफ.डी.एस. कामरिंग जो की मूरिंग बीट में स्थित है। वन विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यशील जाईका वानिकी परियोजना के तहत किये जा रहे सामाजिक विकास कार्य, व मृदा एवम जल संरक्षण कार्यों का आयोजन किया गया है।

महिलाओं की आजीविका को सुधारने और सुढ़ बनाने के लिए आजीविका सुधार परियोजना द्वारा पूंजीगत व्यय का 75% लाभ भी दिया गया। स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को व्यवसाय शुरू करने के लिए 100000/– रूपये परिक्रामी निधि के रूप में दिया गया है जिससे समूह कच्चा माल अथवा बैंक से लोन ले सके। परियोजना द्वारा समूह के सभी सदस्यों को उनके गाँवों में ही प्रशिक्षण की सुविधा दिलवाई गई और समूह द्वारा बुनाई का कार्य किया जा रहा है।

ग्राम वन विकास समिति कामरिंग के समाजिक विकास के कार्यों हेतु परियोजना द्वारा 500000/–रूपये की राशि दी गयी। जिसमें 250000/- रूपये की राशि से गाँव की पुरानी कूल्ह जो क्षतिग्रस्त स्थिति में थी उसकी मुरमत करवाई। ग्राम वन विकास समिति कामरिंग में 2022 में पौधारोपण का कार्य किया गया जिसमें समिति के सदस्यों और महिलायों ने बढ़ चढ़ कर हिसा लिया। जिसमें समिति का सदस्यों ने अपने 7हेक्टेयर क्षेत्र में देवदार, छरमा, विल्लो के पौधे लगाये और समयसमय पर पानी देने का प्रबंध भी

किया गया। पानी का स्त्रोत दूर होने के कारण लोगों ने मिलकर उपाय निकाला की सामाजिक विकास का लिए जो 250000/–रूपये से जो टैंक गाँव में बनना था। उसे गाँव में ना बनाकर पौधारोपण क्षेत्र में बनाया जाए।

सभी की सहमती मिलने के बाद पोधारोपण क्षेत्र में पानी के टैंक का निर्माण करवाया गया। ग्राम वन विकास समिति का उद्देश्य विशेष रूप से पौधों को जीवित रखना है और जंगलों को बचाना है जिससे आने वाले समय में हमारा पर्यावरण स्वच्छ व सुरक्षित रहे।

पारस झांगटा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (वानिकी और जैवविविधता)
वन मंडल लाहौल

कड़ैल ग्राम वन विकास समिति के द्वारा सामुदायिक भवन का निर्माण

कड़ैल गाँव में, जो कि ठियोग वन मंडल के कोटखाई वन परिक्षेत्र में स्थित है, एक अद्वितीय सफलता कहानी का सफर शुरू हुआ। प्रगति के ष्टिकोण से प्रेरित होकर, कड़ैल ग्राम वन विकास समिति (Village Forest Development Society & VFDS) ने पूज्य मंदिर के पास सामुदायिक भवन का निर्माण करने का निर्णय लिया। HP&JICA वानिकी परियोजना से रूपए 5 लाख के ऐश्वर्यपूर्ण अनुदान के साथ, VFDS ने परियोजना की शुरुआत की। हालांकि, जो इस परियोजना को विशेष बनाता है, वह समुदाय की अविनाशी भावना थी। समस्याओं से निराश न होकर, VFDS और स्थानीय निवासी मिलकर, अपने स्वयं के संसाधनों से और रूपए 10 लाख का योगदान किया। परिणाम सिर्फ एक भौतिक संरचना नहीं था; यह समुदाय सहयोग की शक्ति का प्रमाण था और यह दिखाता था कि सामूहिक प्रयास कैसे आकांक्षाएँ वास्तविकता में बदल सकते हैं। सामुदायिक हॉल न केवल एक एकता के प्रतीक के रूप में खड़ा है, बल्कि यह साझा उत्सवों के लिए एक केंद्र भी है, कड़ैल के निवासियों के बीच गर्व और एकता की भावना को बढ़ावा देता है।

डॉ. अभय महाजन
विषय वस्तु विशेषज्ञ (वानिकी और जैवविविधता)
वन मंडल ठियोग

मंडी वन मंडल के समूहों द्वारा केंचुआ खाद उत्पादन

दिनांक 23-26 नवम्बर 2023, वन विभाग के अधीन कार्यशाला जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत वन मंडल मंडी में विभिन्न महिलाओं के 9 SHG अपने घरों में जैविक खाद बना कर प्रातिक खेती की ओर अग्रसर हो रही हैं तथा केंचुआ खाद बना कर मंडी वन मंडल के विभिन्न वन परिक्षेत्रों की नर्सरियों को बेच भी रहे हैं।

जाइका वानिकी परियोजना द्वारा वन परिक्षेत्र मंडी के इन समूहों को केंचुआ खाद बनाने के लिए महिलियों को निशुल्क प्रशिक्षण षि विज्ञानं केंद्र सुन्दर नगर के संसाधन व्यक्तियों से वार्ड में ही दिलाया गया एवं परियोजना द्वारा समूह की हर महिला सदस्य को वर्मीपिटस बनाने में पूंजीगत लगत का 75% राशि स्वीत की हैं।

वन परिक्षेत्र मंडी में हर महिला समूहों के सदस्यों ने 97 वर्मीपिटस बनाये गए और इन्हें बनाने के लिए जो 50% किस्त हर महिला सदस्यों को वितरित की जा चुकी है शेष 25% भी जल्द जारी करवा दी जाएगी।

इन समूहों की की महिलाओं को केंचुए भी उपलब्ध करवाए हैं। 9 समूहों के द्वारा अब तक लगभग (9271 किलोग्राम) 9 टन से अधिक वर्मीकम्पोस्ट को वन विभाग, वन मंडल मंडी के अधीन परिक्षेत्र द्रंग (6025 किलोग्राम)

कटौला (2396 किलोग्राम) और कोटली (850 किलोग्राम) को बेच।

यह केचुआ खाद मंडी वन परिक्षेत्र के अंतर्गत बनी ग्रामीण वन विकास समिति खारसी, वार्ड खारसी, ग्राम भड़याल, बल्ह के शिव शक्ति और लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण वन विकास समिति नैनतुंगा, वार्ड गनेड़ के चेतना और उज्जला स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण वन विकास समिति हरिओम, वार्ड स्क्रोहा के हरिओम स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण वन विकास समिति बजरंगबली, वार्ड टिकरी के अभिषेक स्वयं सहायता समूह और ग्रामीण वन विकास समिति लखदाता पीर के महादेव और राधे ष्ण के स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार की गयी है ।

समूहों के सदस्य इसका उपयोग अपनी निजी भूमि में भी कर रहे हैं। इस कदम से स्वंय सहायता समूहों की महिलायें जैविक खाद बना कर प्रातिक खेती की ओर भी अग्रसर हो रही हैं ओर महिलाओं द्वारा खाद को बेच भी रही हैं तथा यह पहल सराहनीय कदम है। वन मंडल मंडी के वन परिक्षेत्र मंडी में बनी ग्राम वन विकास समिति बजरंगबली वार्ड टिकरी, बल्ह के अंतर्गत समिति बजरंगबली के अभिषेक स्वयं सहयता समूह की है।

ग्राम वन विकास समिति–बजरंगबली वार्ड टिकरी, जायका परियोजना की बैच–ङ्क की ग्रामीण वन विकास समिति है और विन्भिन बैठकों के माध्यम से वार्ड की सूक्ष्म योजना, परियोजना कर्मचारी और वार्ड के लोगों के सुझावों से तैयार की गयी।

वार्ड में वृक्षरोपण, समुदयों के विकास के काम और आजीविका सुधार के लिए दो स्वंय सहायता समूह का गठन हुआ है। समिति के सदस्यों के सहयोग से परियोजना के कार्य किये गए।

वन विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में जायका परियोजना के तहत किये गए विकास कार्य किसानों और बागवानों की जीवन शैली में बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

अभिषेक स्वयं सहयता समूह को प्रशिक्षण परियोजना के माध्यम से करवाए गए है इसी कड़ी में अभिषेक समूह के सदस्यों ने केंचुओं खाद बना कर ऑर्डर आने पर आपूर्ति एवं उसका अपने खेतों में भी उपयोग करने लग गए हैं। समूह के सदस्यों को परियोजना द्वारा निशुल्क प्रशिक्षण षि विज्ञान केंद्र सुन्दर नगर के संसाधन व्यक्तियों एवं वैज्ञानिक से दिलवाया गया। परियोजना की ओर से केंचुआ खाद बनाने के लिए वर्मीपिटस बनाने को पूंजीगत लगत की राशि दी गयी। अब इसमें समूह द्वारा केंचुआ खाद बना कर बेच और अपने उपयोग में ग्रामीण इसका इस्तेमाल अपने खेतों में करने लग गए हैं। अभिषेक समूह के सदस्यों को वन विभाग की नर्सरी में उपयोग के लिए लगभग १०० किलोग्राम केचुआ खाद ऑर्डर आया था। जिसकी आपूर्ति समूह ने कर भी दी हैं केचुआ खाद बेचने पर समूह के सदस्यों को १००० रूपये की आमदनी हुई।

ग्रामीण वन विकास समिति बजरंगबली के अभिषेक स्वयं सहयता समूह ने केचुआ खाद बना कर प्रातिक खेती का मन बना लिया है ।

जितेन शर्मा

विषय वस्तु विशेषज्ञ (वानिकी और जैवविविधता) वन मंडल मंडी

राधा कृष्ण मंदिर स्वयं सहायता समूह द्वारा

केंचुआ खाद उत्पादन

एक अद्वितीय सफलता के संकेत के रूप में, ठियोग वन मंडल, बलसन वन परिक्षेत्र, बैच–2 के राधा ष्ण मंदिर स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सभी 11 सदस्यों ने एक ही दिन में लगभग 4000 रुपये की लाभ कमाया है। समूह ने इस उपाय को अपने स्थानीय क्षेत्रों में अपने उत्पाद (वर्मीकॉम्पोस्ट) की बिक्री के माध्यम से प्राप्त किया।

एसएचजी के सदस्यों ने केवल उद्यमिता की भावना ही नहीं दिखाई है, बल्कि विशेषकर प्रौद्योगिकी खेती प्रथाओं के प्रति प्रतिबद्धता भी। 1500 किलोग्राम से अधिक वर्मीकॉम्पोस्ट की बिक्री ने समूह की समर्पण और उत्पादकता की दिशा में कामयाबी का परिचय किया है। यह अधिशेष इन्वेंटरी उन्हें आगे की बिक्री के लिए अच्छी तरह से स्थित करती है, न केवल उनकी आर्थिक भलाइयों के लिए बल्कि वातावरण के प्रति सकारात्मक खेती के लिए भी।

यह सफलता समुदाय–निर्मित पहलों के कैसे आर्थिक समृद्धि और सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव में सहायक हो सकती है के रूप में एक सराहनीय उदाहरण के रूप में खड़ी होती है। राधा कृष्ण मंदिर स्वयं सहायता समूह की इस साधारिता ने अन्य स्वयं सहायता समूहों के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में सेवा करती है और इन सहकारी प्रयासों के क्षेत्र स्तर पर आर्थिक विकास की संभावना को जोर देती है।

डॉ. अभय महाजन
विषय वस्तु विशेषज्ञ (वानिकी और जैवविविधता)
वन मंडल ठियोग

संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना

प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चौथे चरण की 460 ग्राम वन विकास समितियों व जैव-विविधाता प्रबन्धान समितियों उप समितियों के चयन की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। 460 वी.एफ. डी.एस., 22 वन मण्डलों के 72 वन परिक्षेत्रों व 5 वन्यप्राणी परिक्षेत्रों के सम्बन्धित वार्डों की ग्राम वन विकास समितियों व जैव विविधाता प्रबन्धान समिति उप समितियों का गठन हो चुका है और 459 वन विकास समितियों की सूक्ष्म योजनाऐं तैयार हो चुकी हैं। एक ग्राम वन विकास समितियों के सूक्ष्म योजनाएं तैयार करने हेतु सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन की प्रक्रिया आरम्भ की गई है।

आजीविका घटक के तहत व्यावसायिक योजनाओं का निर्माण

सूक्ष्म योजना तैयार करते समय अनेक आयसृजन गतिविधियां सामने आई हैं। अनेक बैठकें आयोजित की गईं और विस्तृत वार्तालाप किया गया ताकि औपचारिक स्वयं सहायता समूहों और समान रूचि समूहों को सक्रिय बनाया जा सके। उनकी लिखित सहमति ली गई। उनके चुनाव करवाए गए तथा उन्हें अपने प्रतिनिधियों, नियमों और विनियमों का चुनाव करने के लिए कहा गया। परियोजना के अंतर्गत 894 स्वयं सहायता समूह और समान रूचि समूह बनाये गए हैं। समूहों के बैंक खाता खुलवाया गया तथा समूह का मासिक योगदान शुरू किया गया। नेतृत्व, कार्यवाही लेखन, लेखा-जोखा रखने, आपसी लोनिंग आदि बारे में 660 समूहों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। खुम्ब की खेती, हैंडलूम, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, बुनाई, आचार, पत्तल, बैग बनाना, सिरा-बड़ी आदि बनाने की 755 व्यावसायिक योजनाऐं तैयार हो चुकी हैं और कार्य भी शुरू किया। बहुत स्वयं सहायता समूह ने अपने उत्पाद का उत्पादन शुरु कर चुके हैं और अच्छी आय प्राप्त कर रहे हैं।

मीडिया में जाइका वानिकी परियोजना

बांस उत्पादकों की बनेगी सहकारी सभा, खुलेंगे रोजगार के नए द्वार

घुमारवीं में जाइका वानिकी परियोजना की कार्यशाला में बोले कैबिनेट मंत्री धर्माणी

2 दिवसीय फ्यूचरिस्टिक लीडरशिप कार्यशाला संपन्न

कढ़ाई-बुनाई प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

औषधीय पौधों की खेती बढ़ाएगी स्वयं सहायता समूह की आमदनी

अब श्रीलंका भी जाइका वानिकी प्रोजेक्ट का अपनाएगा मॉडल

किन्नौर में चली जैव विविधता संरक्षण की पाठशाला

बंजर खेत में औषधीय पौधों से आया नया सवेरा

अमर उजाला — रामपुर-आसपास

जिले में 105 हेक्टेयर भूमि पर रोपे चिलगोजा के पौधे

बांस उत्पादकों के लिए प्रदेश सरकार बनाएगी सोसायटी

अब जापानी शिटाके मशरूम की खेती से सशक्त बनेंगी महिलाएं

औषधीय गुणों से भरपूर इस उत्पाद की बिक्री के लिए जाइका प्रोजेक्ट ने दिलाया बाजार

जापान से प्रशिक्षण लेकर लौटीं महिलाओं ने रोहड़ू में शुरू की इसकी खेती

कैंसर रोगियों के लिए रामबाण है शिटाके मशरूम

himachalabhiabhi.com

कठोगण में मशरूम प्रदर्शनी केंद्र का रखा नींव पत्थर

जाइका वानिकी परियोजना के तहत रोपे 105 हेक्टेयर भूमि पर चिलगोजा

कड़ु व चिरायता की खेती में जाइका को मिली पहली कामयाबी

मशरूम प्रदर्शनी केंद्र के लिए किया भूमि पूजन

बंजर खेत में औषधीय पौधों से आया नया सवेरा

बांस उत्पादकों के लिए प्रदेश सरकार बनाएगी सहकारी सभा : राजेश धर्माणी

घुमारवीं में जाइका वानिकी परियोजना की कार्यशाला में बोले कैबिनेट मंत्री राजेश धर्माणी

गांव में मशरूम प्रदर्शनी केंद्र के भवन निर्माण कार्य का भूमि पूजन

...री में जान फूंक रहे पारंपरिक परिधान

जाइका से मिल रही ट्रेनिंग, स्वयं सहायता समूह को पांच लाख का ऑर्डर

मंडी खबरनामा

कड़ु-चिरायता की खेती में जाइका को मिली कामयाबी

वन विभाग बिलासपुर के प्रोजेक्ट के तहत स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने बेचे उत्पाद

जायका प्रोजेक्ट महिलाओं को बना रहा आत्मनिर्भर

जाइका प्रोजेक्ट से सात जिलों में खर्च होंगे 100 करोड़ : नागेश

बिलासपुर में घरेलू सामान विक्रय केंद्र का हुआ शुभारंभ

मीडिया में 10वीं गवर्निंग बॉडी की मीटिंग

किन्नौर में चली जैव विविधता संरक्षण की पाठशाला

घुमारवीं में जाइका वानिकी परियोजना की कार्यशाला में बोले कैबिनेट मंत्री राजेश धर्माणी

प्रदेश सरकार बनाएगी बांस उत्पादकों के लिए सोसायटी

दिव्य हिमाचल divyahimachal.com — मंडी

जाइका के तहत कड़ु-चिरायता की खेती में पहली कामयाबी

नाचन वन मंडल के महिला समूहों ने उतारी औषधीय पौधों की पहली खेप, सीपीडी ने थपथपाई ग्रुप की पीठ

जाइका वानिकी परियोजना

विस्तृत जानकारी के लिए संम्पर्क करें:-

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना

नज़दीक हिमाचल प्रदेश मिल्कफैड कॉर्पोरेशन, टुटू शिमला-11, हिमाचल प्रदेश दूरभाष : 0177-2838217,

ईमेल : cpdjica2018hpfd@gmail.com

वेबसाईट : https://jicahpforestryproject.com

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाष : 1902 -226636, ईमेल: pdjicakullu@gmail.com

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, सामुदायिक एवं संस्था क्षमता उत्थान इकाई

जाईका वानिकी परियोजना, रामपुर दूरभाष : 01782-234689, ईमेल : dpdrmp2018@gmail.com